CRYSTAL

20x30

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥जय०॥
एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी। माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥जय०॥
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥जय०॥
पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ॥जय०॥
दीनन की लाज रखो, शम्भु पुत्र वारी। कामना को पूरा करो, ज्यों बलिहारी ॥जय०॥
जो तेरा ध्यान करे ज्ञान मिले उसको। छोड़ तुझे और भला ध्याऊँ मैं किसको ॥जय०॥

2301

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णु-धाता॥ ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ॥
दुर्गा रुप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता॥ ॐ॥
तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥ ॐ॥
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता। सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ ॐ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, व्रत न हो पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ॐ॥
शुभ-गुण-मन्दिर-सुंदर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ ॐ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ॥

2302

श्री दुर्गा चालीसा

सर्वमंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते ॥

[illegible]

दुर्गा चालीसा जो कोई गावै । सब सुख भोग परम पद पावै ॥

2303

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का ॥प्रभु॥ सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥प्रभु॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥प्रभु॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥प्रभु॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥प्रभु॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥प्रभु॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥प्रभु॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ॐ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥प्रभु॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ॐ॥

2304

श्री शिव चालीसा

2305

आरती श्री कुंज बिहारी जी की

[illegible]

आरती ॐ जय जगदीश हरे

[illegible]

2307

[illegible]

" स्तुति श्री रामचन्द्र जी की "

[illegible]

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये

[illegible]

2308

राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे। सहस्त्रनाम तत्तुल्यं, रामनाम वरानने॥

स्तुति श्री रामचन्द्र जी की

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्। नव कंजलोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरम्। पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम् ॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव, दैत्यवंश निकन्दनम्। रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द, दशरथ नन्दनम् ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदारु अंग विभूषणम्। आजानुभुज शर चाप धर, संग्राम जित खरदूषणम् ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर, शेष मुनि मन रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम् ॥
मनु जाहिं राचेउ मिलहि सो, बरु सहज सुन्दर सांवरो। करुणा निधान सुजान शील, सनेह जानत रावरो ॥
एहि भांति गौरि असीस सुनि, सिय सहित हिय हरषीं अली। तुलसी भवानिहि पूजि पुनिपुनि, मुदित मन मन्दिर चली ॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

श्री हनुमान चालीसा

[illegible]

2310

श्री श्याम बाबा जी की आरती

श्याम सुलोचन है अति सुन्दर, मोर मुकुट सिर तन पीताम्बर । गल वैजयन्तिमाल सुहाई, छवि अनूप भक्तन मन भाई ॥
प्रेम सहित जो नाम पुकारा, भक्त लगत श्याम को प्यारा । खाटू में है मथुरा वासी, पार ब्रह्म पूरण अविनाशी ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे । खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ॥ ॐ जय...
रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे । तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण परे ॥ ॐ जय...
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे । खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे ॥ ॐ जय...
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे । सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ॥ ॐ जय...
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धरे । भक्त आरती गावें, जय जयकार करे ॥ ॐ जय...
जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे । सेवकजन निजमुख से, श्री श्याम श्याम उच्चरे ॥ ॐ जय...
श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे । कहत मनोहर स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ॐ जय...
ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे । निज भक्तों के तुमने, पूरण काज करे ॥ ॐ जय...

दोहा : श्याम सलोने सांवरे, बर्बरीक तनु धार । इच्छा पूर्ण भक्त की, करो न लाओ बार ॥

2311

ਅਰਦਾਸ

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ ॥ ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਿਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ॥

[illegible]

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖਾਲਸਾ ॥ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ॥

2313

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ
وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ وَلَآ اَنَا
عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ
مَآ اَعْبُدُ ۗ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ

صدق الله العظيم

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ
لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا
اَحَدٌ

صدق الله العظيم

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ
وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ
وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ
وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ

صدق الله العظيم

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ
اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ
الْخَنَّاسِ ۙ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

صدق الله العظيم

2314